International Journal of Humanities and Social Science Research
www.socialsciencejournal.in
ISSN: 2455-2070
Received: 04-01-2022, Accepted: 19-01-2022, Published: 04-02-2022
Volume 8, Issue 1, 2022, Page No. 93-95

रीवा जिले के शासकीय तथा अशासकीय विद्यालयों में अधोसंरचना का अध्ययन

Ritu Singh Parihar
Guest Lecturer, APSU Rewa, Madhya Pradesh, India

सारांश
रीवा जिले के शासकीय तथा अशासकीय विद्यालयों में अधोसंरचना अध्ययन के लिए रीवा जिले के 54 शासकीय तथा 54 अशासकीय विद्यालयों का चयन न्यादर्श के रूप में किया गया शोध का उदेश्य शासकीय तथा अशासकीय विद्यालयों में अधोसंरचना की स्थिति का अध्ययन करना है निष्कर्षतः यह पाया गया की शासकीय विद्यालयों में अशासकीय विद्यालयों की अपेक्षा अधोसंरचना का आभाव है।

मूल शब्दः शासकीय विद्यालय, अशासकीय, अधोसंरचना

प्रस्तावना
शक्षा आजीवन चलने वाली प्रक्रिया है। टी0रेमण्ट के अनुसार'' शिक्षा विकास का वह क्रम है जिससे व्यक्ति अपने को धीरे–धीरे विभिन्न प्रकार से अपने भौतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक वातावरण के अनुकूल बना लेता है।'' जे0एस0मैकेन्जी का कथन है कि ''शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जो आजीवन चलती रहती है और जीवन के प्रायः प्रत्येक अनुभव से उसके ज्ञान भण्डार में वृद्धि होती है।'' इसी प्रकार से डम्बिल कहता है कि ''शिक्षा व्यक्ति को जन्म से लेकर मृत्यु तक प्रभावित करती है।''
उक्त परिभाषाओं से स्पष्ट है कि शिक्षा का अर्थ सम्पूर्ण जीवन सीखने से है। सीखने से तात्पर्य समाजोपयोगी चीजे सीखने से है। ऐसा कार्य सीखने से है जिससे मनुष्य, मनुष्य कहलाने लायक होता है। शिक्षा का तात्पर्य है कि सीखी हुई सामग्री को जीवित रखना और जीवन में उसका उपयोग करना। सीखी गई सामग्री को दूसरे व्यक्तियों में स्थानान्तरित कर उसे मानव बनाने में योगदान देना शिक्षा के व्यापक अर्थ में शामिल है। शिक्षा का व्यापक अर्थ डिग्री अर्जित करना नही है, बल्कि जिस ज्ञान को अर्जित करने पर डिग्री प्राप्त हुई है, उस का समाज में अनुप्रयोग करना है।
उद्देश्यः शासकीय तथा अशासकीय विद्यालयों अधोसंरचना की स्थिति का अध्ययन करना
परिकल्पनाः शासकीय प्रारंभिक स्तर के विद्यालयों में निजी प्रारम्भिक स्तर के विद्यालयों के अपेक्षा अधोसंरचना का आभाव है
न्यादर्शः रीवा जिले के 54 शासकीय तथा 54 अशासकीय विद्यालय

सारणी 1: विद्यालयों की अधोसंरचना संबंधी अध्ययन

संख्या क्रमांक	अधोसंरचना का विवरण	विद्यालयों की संख्या	
		शासकीय (54)	अशासकीय (54)
1	पीने के पानी की उपलब्धता	53	54
2	शौचालय की उपलब्धता (क्रियाशील)	11	54
3	बालक–बालिका अलग–अलग शौचालय (क्रियाशील)	02	54
4	कक्षाकक्ष में पंखा	00	30
5	बैठने की व्यवस्था (कुर्सी–टेवल)	00	51
6	वाहन सुविधा	00	27
7	स्मार्ट क्लास की व्यवस्था	00	17
8	शौचालय की स्वच्छता	02	46
9	खेल सामग्री की पर्याप्तता	08	48
10	खेल के मैदान की उपलब्धता	28	20
11	कम्प्यूटर लैब की उपलब्धता	00	19
12	वाद्य यंत्रो की उपलब्धता	00	23
13	रेडियो की उपलब्धता	53	09
14	पुस्तकालय की उपलब्धता	00	16
15	गार्डन की उपलब्धता	00	29
16	विद्युत की उपलब्धता	05	54

सारणी से स्पष्ट है कि शासकीय प्रारंभिक स्तर की विद्यालयों में अधोसरंचना का बहुत ज्यादा अभाव है। अधोसंरचना की दृष्टिकोण से शासकीय प्रारंभिक स्तर के विद्यालयों में पर्याप्त अभाव पाया गया है। अधोसंरचना के आठ क्षेत्र ऐसे है, जिनका विद्यालयों में नामोनिशान ही नही है। वे आठ क्षेत्र है कक्षा कक्ष में पंखा, बैठने की व्यवस्था, (कुर्सी एवं टेबल), वाहन सुविधा, स्मार्ट क्लास की व्यवस्था, कम्प्यूटर लैब की उपलब्धता, पुस्तकालय की उपलब्धता, संगीत हेतु वाद्य यंत्रो की उपलब्धता तथा स्वच्छ गार्डेन की उपलब्धता। इसके अतिरिक्त बालक बालिकाओं हेतु पृथक–पृथक शौचालय की व्यवस्था, शौचालय की स्वच्छता एवं विद्युत की उपलब्धता के मामले में भी शासकीय विद्यालय अतिगरीब दृष्टिगोचर हुए। 54 शासकीय विद्यालय के अवलोकन में इनकी संख्या क्रमशः 2,2 एवं 5 पायी गई जो न के बराबर ही है। अधोसंरचना के मामले में शासकीय विद्यालयों में पीने के पानी एवं रेडियो के अतिरिक्त सर्वेक्षण अथवा अवलोकन के कुछ भी नही पाया गया है इसके विपरीत निजी विद्यालयो में अधोसंरचना की स्थिति काफी अच्छी पायी गई है। पीने के पानी, शौचालय, बैठने की व्यवस्था, शौचालय की स्वच्छता, खेल सामग्री की पर्याप्तता तथा विद्युत की उपलब्धता के मामले मे निजी विद्यालय पर्याप्त सुदृढ़ स्थिति में पाये गये। सारणी में वर्णित अन्य क्षेत्रों में भी अधोसंरचना की स्थिति निजी विद्यालयों में औसत दर्ज की पायी गई है।

अवलोकन के एक बिन्दु पर 54 उत्तर ''हॉ'' में अर्थात–परिकल्पना के विपक्ष में आ सकते है। इस पर अवलोकन पत्रक के कुल 16 बिन्दुओ पर 'हॉ' में अर्थात परिकल्पना के विपक्ष कुल 864 उत्तर आ सकते है। इसी प्रकार परिकल्पना के पक्ष में भी अर्थात ''नही'' में भी 864 उत्तर प्राप्त हो सकते है किन्तु उत्तर कुछ इस प्रकार प्राप्त हुए है। सारणी क्र. षासकीय प्रारंभिक स्तर के विद्यालयों में अधोसंरचना का अध्ययन नही टाईप है।

उपर्युक्त परिकल्पना के पक्ष में 702 तथा विपक्ष में 162 उत्तर प्राप्त हुए है। इस प्रकार निजी विद्यालयों में अधोसंरचना संबंधी अध्ययन परिणाम इस प्रकार प्राप्त हुए है।

सारणी 2: निजी प्रारंभिक स्तर के विद्यालयों में अधोसंरचना का अध्ययन

परिकल्पना	परिकल्पना के पक्ष में प्राप्त उत्तरों की संख्या ''नही'' में	परिकल्पना के विपक्ष में प्राप्त उत्तरों की संख्या ''हॉ'' में	कुल उत्तरों की संख्या
शासकीय प्रारंभिक स्तर के विद्यालयों में निजी प्रारंभिक विद्यालयों की अपेक्षा अधोसंरचना का अभाव है।	551	313	864

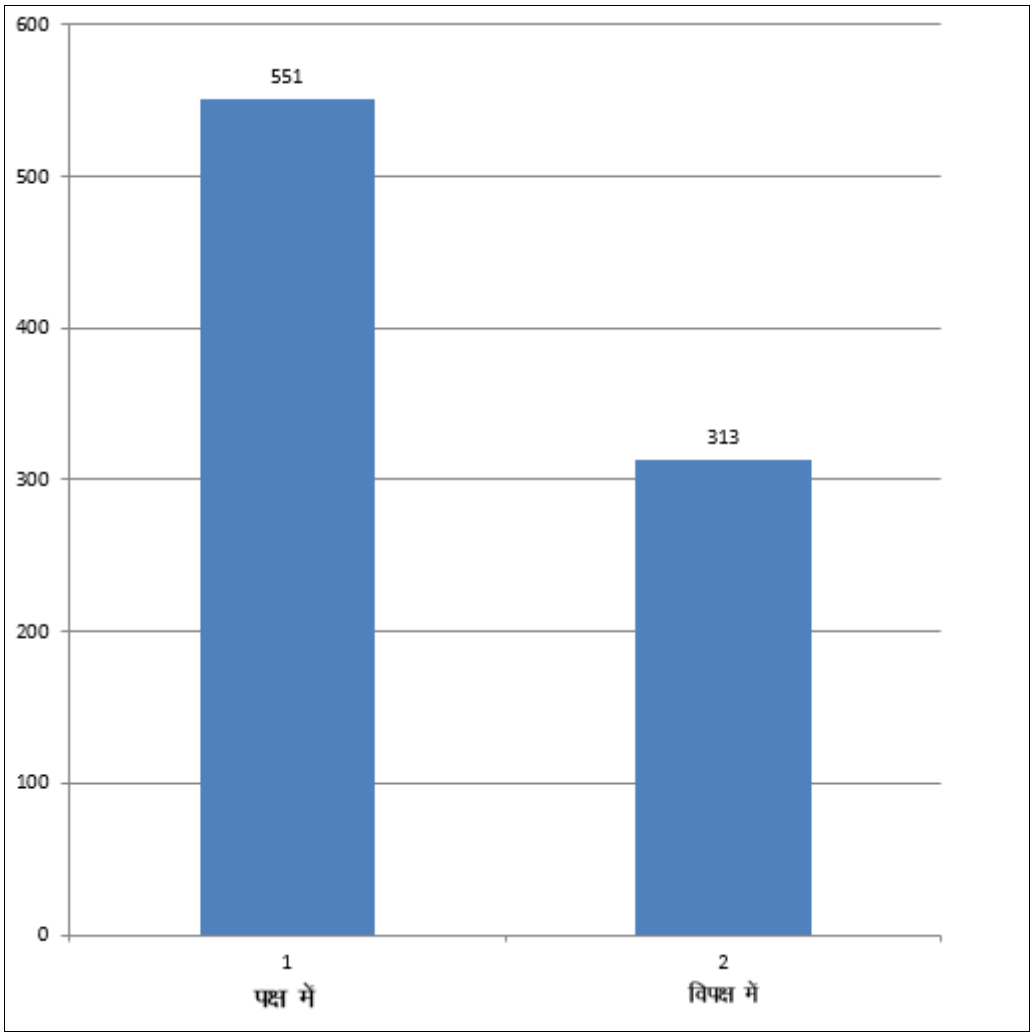

चित्र 1: निजी प्रारंभिक स्तर के विद्यालयों के आकड़ों के आधार परपरिकल्पना का सत्यापन

उक्त दोनो सारणी और आलेख से स्पष्ट है कि शोधार्थी की परिकल्पना क्रमांक–9 ''शासकीय प्रारंभिक स्तर के विद्यालयों में निजी प्रारंभिक स्तर के विद्यालयों की अपेक्षा अधोसंरचना का अभाव है।'' स्वीकृत होती है फिर भी शोधार्थी द्वारा शासकीय प्रारंभिक स्तर के विद्यालयों में अधोसंरचना के अभाव को स्पष्ट करने के लिए काई–वर्ग परीक्षण के माध्यम से सांख्यिकीय विश्लेषण किया गया है। और दोनो (शासकीय और निजी) में अधोसंरचना में अंतर की सार्थकता को स्पष्ट किया गया है।

सारणी 3: शासकीय विद्यालयों में अधोसंरचना के संबंध में परिकल्पना के पक्ष एवं विपक्ष में प्राप्त मत में अंतर की सार्थकता

परिकल्पना शासकीय प्रारंभिक स्तर के विद्यालयों की अपेक्षा अधोसंरचना का अभाव है	परिकल्पना के पक्ष में प्राप्त उत्तर	परिकल्पना के विपक्ष में प्राप्त उत्तर	कुल उत्तर	स्वतंत्रता की कोटि (र.1) +(ब.1)
निरीक्षित आवृत्ति ; f_o द्ध	702	162	864	2
प्रत्याशित आवृत्ति ; f_e द्ध	432	432	864	
$f_o - f_e$	270	–270		
$(f_o - f_e)^2$	72900	72900		
$\frac{(f_o - f_e)^2}{f_e} = \chi^2$	168.75	168.75		
$\sum \chi^2$	337.5			

व्याख्या

स्वतंत्रता की कोटि 2 के 0.05 विश्वास स्तर पर χ^2 (काई वर्ग) का मान 5.99 तथा 0.01 विश्वास स्तर पर काई वर्ग का मान 9.21 है। जबकि उक्त गणना से प्राप्त काई वर्ग का मान 337.5 है। जो उक्त दोनो मानों (5.99 तथा 9.21) से बहुत अधिक है। अतः शोधार्थी की परिकल्पना ''शासकीय प्रारंभिक स्तर के विद्यालयों में निजी प्रारंभिक विद्यालयों की अपेक्षा अधोसंरचना का अभाव है। ''यद्यपि सारणी से भी स्पष्ट किया जा चुका है किन्तु और अधिक मानकता के उद्देश्य से शोधार्थी द्वारा सांख्यिकीय विधि से भी प्रमाणित करने का यह प्रयास किया गया है। शासकीय विद्यालयों में निश्चित रूप से अच्छी अधोसंरचना के अभाव में विद्यालयो में विद्यार्थियो के नामांकन पर प्रतिकूल प्रभाव परिलक्षित होता है।

निष्कर्ष

शासकीय विद्यालयों में पीने के पानी व शौचालय की अनुपलब्धता हैं। कक्षा में पंखो की व्यवस्था नहीं पायी गयी बैठने के लिए कुर्सी मेज, वाहन सुविधा, स्मार्ट क्लास का अभाव पाया गया है। कंप्यूटर लैब पुस्तकालय की उपलब्धता भी नहीं पायी गयी तथा विधुत , खेल सामग्री आदि के दृश्टिकोण से भी शासकीय विद्यालयों अपर्याप्तता पायी गयी है तथा शासकीय विद्यालयो की अपेक्षा निजी विद्यालयों में संसाधनों की पर्याप्तता पायी गयी है।

सुझाव

1. शिक्षकों को विद्यालयों की अधोसंरचना को सुदृढ़ रूप प्रदान करने में विद्यालय प्रमुख का सहयोग करने की आवश्यकता है
2. प्रधानाध्यापकों को यह सुझाव है की ये शाला की अधोसंरचना विकास पर ध्या देकर उसे पूर्ण करे , जिससे विद्यालयों को अध्ययन के लिए उपयुक्त वातावरण मिल सकें।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. कपिल एच केः अनुसन्धान विधियाँ प्रसाद भार्गव, आगरा
2. जय सिंहः विद्यालय प्रशासन एवं प्रबंधन
3. राय, पारसनाथ – ''अनुसंधान परिचय'', कादशम संस्करण, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, आगरा।
4. P-D- Sharma- Bharat mein Shiksha &star AVM] Mudde Samasyaen
5. Dr Anshu Mangal shaikshik anusandhan ki vidhiyan AVm Shaikshik Sankhiyki